Faizan e Junaid Baghdadi (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 337
Weekly Booklet : 337

सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या के ग्यारहवें पीरो मुर्शिद का तज़्किरा, वग़ैरा

फ़ैज़ाने जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़हात 33

अल्लाह वालों की नज़र में दुन्या...? 03

20 साल की उ़म्र में फ़तवा नवीसी 13

मुझे जुनैद पर फ़ख़्र है 19

आख़िरी वक़्त में भी नमाज़ 27

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

फ़ैज़ाने जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 29 सफ़्हात का रिसाला : "**फ़ैज़ाने जुनैद बग़दादी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" पढ़ या सुन ले उसे औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमा कर बे हिसाब बख़्श दे और उसे जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ तमाम इबादात से अफ़्ज़ल

ह़ज़रते फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर तुम मा'लूम करना चाहो कि दुरूद शरीफ़ बाक़ी तमाम इबादात से अफ़्ज़ल है तो इस आयत (या'नी आयते दुरूद) में ग़ौर करो। क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने बाक़ी इबादात का अपने बन्दों को हुक्म इर्शाद फ़रमाया है और दुरूदे पाक पहले ख़ुद भेजा फिर फ़िरिश्तों को इस का हुक्म फ़रमाया और फिर तमाम ईमानदारों को भेजने का हुक्म दिया। (مطالع المسرات، ص23)

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुह़द्दिसे आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रत मौलाना शाह अबुल महामिद सय्यिद मुह़म्मद अश्रफ़ी जीलानी कछौछवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

शुग़्ल[1] वोह हो कि शग़्ल में कर दे हमें ख़ुदा के साथ
पढ़िये दुरूद झूम कर सय्यिदे ख़ुश नवा के साथ

(फ़र्श पर अ़र्श, स. 68)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

1... काम

मालदारी दिल से है न कि माल से

अल्लाह पाक के एक बहुत बड़े वली की ख़िदमते बा बरकत में एक मालदार शख़्स ने हाज़िर हो कर पांच सो अश्रफ़ियां (या'नी सोने के सिक्के) पेश करते हुए अ़र्ज़ की : हुज़ूरे वाला ! येह छोटा सा तोह़फ़ा क़बूल फ़रमा लीजिये ! उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास इस के इ़लावा और भी मालो दौलत है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी ! मेरे पास बहुत मालो दौलत है, आप ने फ़रमाया : क्या तुम्हारी येह ख़्वाहिश है कि तुम्हें और मालो दौलत मिले ? उस ने अ़र्ज़ की : जी बिल्कुल, उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : येह अश्रफ़ियां अपने पास ही रख लो क्यूं कि तुम मुझ से ज़ियादा इन के ह़क़दार हो क्यूं कि **अल्लाह** पाक के करम से मुझे इन की ज़रूरत नहीं और तुम्हारे दिल में इन की ख़्वाहिश मौजूद है। (الرسالۃ القشیریۃ، ص199)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अस्ल मालदारी किस में है ?

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : لَيْسَ الْغِنٰى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ ، وَلٰكِنَّ الْغِنٰى غِنَى النَّفْسِ **तरजमा :** मालदारी माल के ज़ियादा होने में नहीं, हां ! मालदारी दिल के ग़नी होने (या'नी दिल की अमीरी) में है।

(بخاری، 4/233، حدیث:6446)

इमाम इब्ने बत्ताल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **''मालदारी माल के ज़ियादा होने में नहीं''** के तह़्त फ़रमाते हैं इस से मुराद येह है कि अस्ल मालदार वोह नहीं जिस के पास दुन्या का बहुत ज़ियादा साज़ो सामान हो क्यूं कि बहुत से वोह लोग जिन्हें **अल्लाह** पाक ने माली वुस्अ़त दी है

वोह दिल के कन्जूस होते हैं, जो मिला उस पर उन का दिल क़नाअ़त नहीं करता और मज़ीद की त़लब में कोशिश करता रहता है और वोह इस बात की भी परवा नहीं करता कि माल कहां से आ रहा है तो गोया वोह माल की ह़िर्स और उसे ज़ियादा से ज़ियादा जम्अ़ करने की जुस्त्जू की वज्ह से **माल का फ़क़ीर** है। अस्ल मालदारी वोह है जिस के सबब बन्दा **अल्लाह** पाक के अ़त़ा किये हुए थोड़े माल पर क़नाअ़त करता है और ज़ियादा की ह़िर्स व लालच नहीं करता और न ही ज़ियादा की त़लब में रोता धोता है, तो गोया वोह ह़क़ीक़ी मालदार है और येही मालदारी **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहना और उस के फ़ैसले को मानना है, येह जानते हुए कि जो **अल्लाह** के यहां है वोह नेकों के लिये बेहतर है। (شرح ابن بطال، 10/165) शैख़ सा'दी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : تَوَنگَرِی بَہ دِل اَسْت نَہ بَہ مال या'नी मालदारी माल से नहीं, दिल से होती है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अल्लाह वालों की नज़र में दुन्या की ह़ैसिय्यत

क्या आप जानते हैं कि मालदार का माल ठुकरा देने वाले ज़ोह्दो तक़्वा के पैकर येह वलिय्ये कामिल कौन थे ? येह अ़ज़ीम बुज़ुर्ग सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के 11वें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رحمۃ اللہ علیہ थे। औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم दुन्या की मह़ब्बत, मालो दौलत कि कसरत से दूर होते हैं। **अल्लाह** वालों की नज़र में मालो दौलत की कुछ ह़ैसिय्यत नहीं। औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم मिट्टी के ढेर की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाएं तो वोह सोने का बन जाए क्यूं कि औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم अपनी सारी ज़िन्दगी **अल्लाह** पाक के अह़कामात पर अ़मल करने और यादे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में

गुज़ारते हैं, जब काएनात के ख़ालिक़ो मालिक की ख़ास नज़रे इनायत उन्हें ह़ासिल हो जाती है तो इस अनमोल ने'मत के सामने दुन्या की फ़ानी ने'मतों और मालो दौलत की कुछ अवक़ात नहीं, किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

तख़्ते सिकन्दरी पर वोह थूकते नहीं हैं बिस्तर लगा हुवा है जिन का तेरी गली में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तआ़रुफ़

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के 11वें बुज़ुर्ग, ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत बड़े आ़लिमे दीन बल्कि मुफ़्तिये वक़्त थे। आप का मुबारक नाम जुनैद, कुन्यत अबुल क़ासिम और मश्हूर लक़ब "सय्यिदुत्ताइफ़ा" (या'नी गुरौहे औलियाए किराम के सरदार) है। 216 हिजरी में आप की विलादत (Birth) बग़दाद शरीफ़ में हुई। इसी वज्ह से आप को "**बग़दादी**" कहा जाता है। (شریف التواریخ، 522/1) आप के दादाजान का नाम "**जुनैद**" था, वालिदे मोह़तरम ने इस वज्ह से आप का नाम जुनैद रखा। आप के वालिदे मोह़तरम का नाम "**मुह़म्मद**" था, जो कि कांच (Glass) का काम करते थे इसी वज्ह से आप को "**क़वारीरी**" भी कहा जाता है और कपड़े का काम करने के सबब "**ख़ज़्ज़ाज़ी**" भी कहते हैं। (الرسالۃ القشیریۃ، ص50)(تاریخ بغداد، 250/7) आप मश्हूर वलिय्ये कामिल ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के भान्जे और मुरीद भी हैं।

शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में ज़िक्रे ख़ैर

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से अपने हर मुरीद व त़ालिब को जो शजरा शरीफ़ दिया गया है उस में ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से यूं दुआ़ की गई है :

बहरे मा 'रूफ़ो सरी मा 'रूफ़ दे बेख़ुद सरी जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे बा सफ़ा के वासिते

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : बह्र : वासिते । **मा 'रूफ़ :** भलाई । **बेख़ुद सरी :** आ़जिज़ी, फ़रमां बरदारी । **जुन्दे ह़क़ :** ह़क़ का लश्कर । **बा सफ़ा :** सुथरा । (इस शे'र में सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के नवें, दसवें और ग्यारहवें पीरो मुर्शिद के वसीले से दुआ़ की गई है ।)

दुआ़इया शे 'र का मफ़्हूम[2]

या अल्लाह पाक ! मुझे ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तुफ़ैल नेकी और भलाई अ़ता फ़रमा और ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का वासिता मुझे आ़जिज़ी व इन्किसार का पैकर बना दे और ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का वासिता मुझे अपने लश्कर में शामिल फ़रमा ले ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अ़रबी शजरा

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक अ़रबी शजरा शरीफ़, ब सीग़ए दुरूद शरीफ़ तह़रीर फ़रमाया है, उस में ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर इस त़रह़ करते हैं :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَعَلَى الْمَوْلَى الشَّيْخِ جُنَيْدِنِ الْبَغْدَادِيْ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

2... शे'र के बारे में दिलचस्प वज़ाह़त : पहले मिस्रअ़ में लफ़्ज़े "मा'रूफ़" दो मरतबा आया है । पहला मा'रूफ़ तो बुज़ुर्ग का नाम है और दूसरे मा'रूफ़ के मा'ना नेकी व भलाई के हैं । यूंही लफ़्ज़े "सरी" (येह भी बुज़ुर्ग का नाम है) के साथ बेख़ुद सरी का ज़िक्र करने में येह ख़ूबी है कि दोनों में लफ़्ज़ "**सरी**" मौजूद है । दूसरे मिस्रअ़ में जुनैद (येह भी बुज़ुर्ग का नाम है) से पहले लफ़्ज़ "जुन्द" लाया गया है, दोनों में लफ़्ज़ी मुनासबत है कि दोनों में "ج, ن और د" है । (शर्ह़े शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या, स. 67)

ऐ **अल्लाह** पाक ! तू हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत व बरकत नाज़िल फ़रमा और हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब और हमारे सरदार शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर भी ।

(तारीख़ व शर्ह़े शजरए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 109)

शानो अ़ज़मत

ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को उ़लमाए किराम ने **''शैख़े तसव्वुफ़''** (या'नी सूफ़ियों का इमाम) फ़रमाया है क्यूं कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने तसव्वुफ़ को शरीअ़त की मन्अ़ की हुई बातों से दूर कर के क़ुरआनो ह़दीस के क़वानीन के ऐ़न मुत़ाबिक़ तरतीब दिया । (الاعلام للزرکلی، 2/141، ملخصًا)

ह़ज़रते अबुल अ़ब्बास अ़त़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इ़ल्मे तसव्वुफ़ में हमारे इमाम और पेश्वा ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं ।

(نفحات الانس، ص257)

ह़ज़रते अबू जा'फ़र ह़द्दाद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे : अगर अ़क़्ल **''मर्द''** होती तो ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सूरत पर होती । (या'नी आप बहुत ज़ियादा ज़हीन थे ।) (نفحات الانس، ص258)

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में कहा जाता है कि आप के ज़माने में आप जैसा पाकबाज़ और दुन्या से बे रग़बत नहीं देखा गया ।

(سیر اعلام النبلاء، 11/153)

ह़ज़रते अबू बक्र कत्तानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मक्कए पाक में आप से एक सुवाल किया, जिस का आप ने ऐसा शानदार जवाब दिया कि वहां मौजूद बड़े बड़े बुज़ुर्गों ने आप को **''ताजुल आ़रिफ़ीन''** का लक़ब दिया ।

(الرسالۃ القشیریۃ، ص355)

इमाम इब्ने असीर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने ज़माने के इमामे दुन्या हैं। (الکامل فی التاریخ، 6/469)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

बाज़ार में इबादत

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रोज़ाना दुकान पर पर्दा डाल कर 400 नवाफ़िल अदा करते थे। (الرسالۃ القشیریۃ، ص51) 30 साल तक आप का येह मा'मूल रहा कि इ़शा की नमाज़ के बा'द खड़े हो कर सुब्ह़ तक **अल्लाह, अल्लाह** पढ़ते रहते और इसी वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाते। आप फ़रमाते हैं : 20 साल तक तक्बीरे ऊला मुझ से फ़ौत न हुई और अगर नमाज़ में दुन्या का ख़याल आ जाता तो मैं वोह नमाज़ दोबारा अदा करता था। (تذکرۃ الاولیاء، 2/7، 9)

काश ! ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े हम भी पांचों नमाज़ें तक्बीरे ऊला के साथ अदा करने वाले बन जाएं। तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ने वाला ख़ुश नसीब अह़ादीसे मुबारका में बयान किये गए **''तक्बीरे ऊला''** और जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने के बे शुमार फ़ज़ाइल का ह़क़दार होगा। बा जमाअ़त नमाज़ का ज़ौक़ बढ़ाने के लिये चन्द अह़ादीसे मुबारका पेश की जाती हैं :

"नमाज़" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ नमाज़े बा जमाअ़त तन्हा पढ़ने से सत्ताईस (27) दरजे बढ़ कर है।

(بخاری، 1/232، حدیث:645)

﴿2﴾ **अल्लाह** पाक बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने वालों को मह़बूब (या'नी प्यारा) रखता है। (مسند امام احمد، 2/309، حدیث:5112)

﴾3﴿ जब बन्दा बा जमाअ़त नमाज़ पढ़े फिर **अल्लाह** पाक से अपनी ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) का सुवाल करे तो **अल्लाह** पाक इस बात से ह़या फ़रमाता है कि बन्दा ह़ाजत पूरी होने से पहले वापस लौट जाए। (حلیۃ الاولیاء، 7/299، رقم:10591)

﴾4﴿ जिस ने कामिल (या'नी पूरा) वुज़ू किया, फिर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये चला और इमाम के साथ (नमाज़) पढ़ी उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।

(ابن خزیمہ، 2/373، حدیث:1489)

बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस दौर में नेक बनने के लिये मुख़्तलिफ़ **"72 नेक आ'माल"** अ़त़ा फ़रमाए हैं। उस में दूसरा नेक अ़मल पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करने ही के बारे में है। नमाज़े बा जमाअ़त के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत की किताब **"फ़ैज़ाने नमाज़"** पढ़िये। येह किताब दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड की जा सकती है बल्कि नेकी की दा'वत आ़म करने की निय्यत से दूसरों को भी येह पी.डी.एफ़. (Share) कीजिये। अमीरे अहले सुन्नत लिखते हैं :

जमाअ़त से गर तू नमाज़ें पढ़ेगा ख़ुदा तेरा दामन करम से भरेगा

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

दिल की बात जान ली (करामत)

ह़ज़रते ख़ैरुन्नस्साज رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं अपने घर में बैठा था, दिल में ख़याल आया कि ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए हैं मगर मैं ने तवज्जोह हटा दी मगर फिर दूसरी और तीसरी बार येही ख़याल आया, मैं घर से बाहर आया तो वाक़ेई ह़ज़रते जुनैद

बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दरवाज़े पर मौजूद थे, मुझ से फ़रमाया : पहले ख़याल पर क्यूं न निकले ! (الرسالۃ القشیریۃ، ص274)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सारा साल रोज़े

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के ग्यारहवें बुज़ुर्ग, ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सारा साल नफ़्ल रोज़े रखा करते थे । (شریف التواریخ، 1/526)

तुम ने ह़ज का सफ़र किया ही नहीं

एक मरतबा आप की ख़िदमते मुबारका में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा, आप ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि कहां से आए हो ? उस शख़्स ने जवाब दिया कि मैं ह़ज के लिये गया था । आप ने पूछा : तो क्या तुम ह़ज कर चुके ? उस ने जवाब दिया कि जी हां ह़ज कर चुका हूं । आप ने फ़रमाया कि अच्छा येह तो बताओ कि शुरूअ़ में जब तुम अपने घर से निकले और अपने वत़न को छोड़ा तो क्या सब गुनाहों को भी अपने पीछे छोड़ दिया था ? उस ने जवाब दिया : नहीं । आप ने फ़रमाया कि फिर तो तुम ने सफ़रे ह़ज इख़्तियार ही नहीं किया । (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 193)

अल्लाह पाक के नेक बन्दे नेक आ'माल नहीं छोड़ते

जा नशीने ह़ज़रते जुनैदे बग़दादी, ह़ज़रते अबू मुह़म्मद जुरैरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक शख़्स के सामने मा'रिफ़त (या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान) का ज़िक्र किया तो उस शख़्स

ने कहा : मा'रिफ़ते इलाही वाले उस मक़ाम तक पहुंच जाते हैं कि नेकी और कुर्बे इलाही वाले आ'माल छोड़ देते हैं। येह सुन कर आप ने फ़रमाया : कुछ लोग आ'माल को छोड़ने की बातें करते हैं और येह मेरे नज़्दीक बहुत बड़ी बात है, बेशक **अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाले **अल्लाह** पाक के अ़ता किये हुए आ'माल को इख़्तियार करते हैं, वोह उन ही के साथ उस की बारगाह में हाज़िर होते हैं और अगर मैं एक हज़ार साल ज़िन्दा रहूं तब भी नेक आ'माल में से एक ज़र्रा भी कम न करूं। (حلیۃ الاولیاء، 10/296، رقم:15286)

سُبْحٰنَ اللہ ! **अल्लाह** वालों की भी क्या ख़ूब शान है, काश ! हमें भी इ़बादत का ऐसा ज़ौक़ो शौक़ नसीब हो जाए, काश ! फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ तहज्जुद, इशराक़, चाश्त और अव्वाबीन पढ़ने की भी सआ़दत मिल जाए। रमज़ानुल मुबारक के फ़र्ज़ रोज़े रखें और दीगर फ़ज़ीलत वाले महीनों (ज़ुल ह़ज शरीफ़, मुह़र्रम शरीफ़, रजब शरीफ़, शा'बान शरीफ़) में नफ़्ल रोज़े रखने की भी तौफ़ीक़ मिल जाए। ज़कात फ़र्ज़ हो तो इस की अदाएगी के साथ साथ कुछ न कुछ नफ़्ली ख़ैरात की भी सआ़दत मिले। नेक आ'माल का जज़्बा पाने के लिये आइये ! बारगाहे जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के एक मिस्रए़ के ज़रीए़ फ़रियाद करते हैं :

یا جُنید! اے بادشاہِ جُندِ عرفاں اَلْمَدَد

तरजमा : अल्लाह पाक की पहचान रखने वाले औलिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के गुरौह के बादशाह ! ऐ जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ! हमारी मदद फ़रमाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

पीरो मुर्शिद की नसीह़त

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे पीरो मुर्शिद,

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : कोशिश करना कि तुम्हारे घर में इस्ति'माल होने वाले बरतन तुम्हारी जिन्स (या'नी मिट्टी) से हों। (قوت القلوب، 1/344)

हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिट्टी के बरतनों का इस्ति'माल साबित है

इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तांबे, पीतल के बरतनों में खाना पीना साबित नहीं। मिट्टी या काठ (या'नी लकड़ी) के बरतन थे और पानी के लिये मश्कीज़े भी। (फ़तावा रज़विय्या, 22/129) मज़ीद फ़रमाते हैं : (मिट्टी के बरतन) में खाना पीना भी तवाज़ोअ़ से क़रीब तर है, खाने पीने के बरतन मिट्टी के होना अफ़्ज़ल है कि इस में न इसराफ़ है न इतराना।

(फ़तावा रज़विय्या, 1/336 मुल्तक़त़न)

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से खाने में मिट्टी के बरतन इस्ति'माल करना साबित है जैसा कि सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पक्की मिट्टी के बरतन से पानी पीते हुए देखा। (معرفۃ الصحابۃ، 2/174، رقم:2371) ह़दीस में है : जो अपने घर के बरतन मिट्टी के रखे, फ़िरिश्ते उस की ज़ियारत करें। (ردالمحتار، 9/566) मन्क़ूल है कि मिट्टी के बरतनों पर कोई ह़िसाब नहीं। (قوت القلوب، 1/288 ماخوذاً)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! क्या ही अच्छा हो कि हम भी ह़ुसूले सवाब और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मिट्टी के बरतन इस्ति'माल करें। अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना मुह़म्मद

इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सालहा साल से मिट्टी के बरतन में खाने पीने का मा'मूल है, आप फ़रमाते हैं : मेरा आ़म प्लेटों में खाने को दिल नहीं करता अलबत्ता येह न कहा जाए कि मिट्टी के बरतनों का इस्ति'माल सुन्नत है क्यूं कि इस पर कोई वाज़ेह़ रिवायत नहीं मिल सकी।

मैं मिट्टी के सादा से बरतन में खाऊं चटाई का हो बिस्तरा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 103)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सात साल की उ़म्र में इल्मी फ़ज़्लो कमाल

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक बार मद्रसे से घर तशरीफ़ लाए तो देखा वालिदे मोह़तरम रो रहे हैं, आप ने वज्ह पूछी तो बताया : मैं ने तुम्हारे मामूं ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ज़कात की कुछ रक़म पेश की तो उन्हों ने लेने से इन्कार कर दिया, आज मुझे येह एह़सास हो रहा है कि मैं ने अपनी ज़िन्दगी ऐसी चीज़ में गुज़ार दी जिसे ख़ुदा के दोस्त भी पसन्द नहीं करते। ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वोह रक़म ले कर मामूं के हां पहुंचे, मामूं ने दोबारा मन्अ़ किया तो आप ने फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप पर फ़ज़्ल और मेरे वालिद से अ़द्ल किया है। ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ जुनैद ! वोह कौन सा अ़द्ल है जो तुम्हारे वालिद के साथ किया गया और वोह कौन सा फ़ज़्ल है जो मुझ पर किया गया है ? आप ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक ने आप पर येह फ़ज़्ल फ़रमाया कि आप को दरवेशी इनायत फ़रमाई और मेरे वालिद के साथ येह अ़द्ल किया कि उन को दुन्या में मश्ग़ूल कर दिया, अब येह आप की मरज़ी है कि आप इसे क़बूल फ़रमाएं या रद कर दें, मेरे वालिदे

मोहतरम पर ज़कात की अदाएगी ज़रूरी है। हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को येह बात निहायत पसन्द आई, आप ने इर्शाद फ़रमाया : बेटा ! ज़कात क़बूल करने से पहले मैं ने तुम को क़बूल किया। हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस के बा'द मामूंजान के पास रहने लगे। एक बार मक्कए पाक हाज़िर हुए तो वहां कई बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم "**शुक्र**" के बारे में गुफ़्तगू कर रहे थे, जब आप से पूछा कि ऐ बच्चे ! तुम इस के बारे में क्या कहते हो ? तो आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की ने'मतों के साथ उस की ना फ़रमानी न की जाए। येह सुन कर सब ने इस पर इत्तिफ़ाक़ किया।

(تذکرۃ الاولیاء، 2/6)

20 साल की उ़म्र में फ़तवा नवीसी

हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने मामूं हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जो कि आप के पीरो मुर्शिद भी हैं और इस के इलावा आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हज़रते हारिस मुहासिबी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के फ़ैज़ाने सोहबत से भी मुस्तफ़ीद हुए। हज़रते अबू सौर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से इल्मे फ़िक़्ह हासिल किया और 20 साल की उ़म्र में उन की मजलिस में उन की मौजूदगी में फ़तवा देने लगे।

(الرسالۃ القشیریۃ، ص50)

बयान का आग़ाज़ और पीरो मुर्शिद का इख़्तियार

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : आप हमें वा'ज़ो नसीहत कीजिये ! आप ने फ़रमाया : जब तक हम में पीरो मुर्शिद हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तशरीफ़ फ़रमा हैं मैं वा'ज़ो नसीहत नहीं कर सकता। हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने भी आप को वा'ज़ो नसीहत कहने

का हुक्म फ़रमाया, मगर आप ने बड़े मुअद्दबाना अन्दाज़ में येही अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप के होते हुए मैं वा'ज़ कहूं, मुझे अच्छा नहीं लगता। शबे जुमुआ़ जब सोए तो ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चांद सा चेहरा चमकाते तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : जुनैद ! लोगों को बयान करो ! तुम्हारे बयान के ज़रीए़ **अल्लाह** पाक बहुत लोगों को नजात अ़ता फ़रमाएगा। जब सुब्ह़ हुई तो ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मुरीद को भेजा कि जब जुनैद नमाज़ से सलाम फेरें तो कहना : कई लोगों और मेरे पैग़ाम से भी तुम ने बयान शुरूअ़ नहीं किया। अब तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी हुक्म इर्शाद फ़रमा दिया है। ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने जान लिया कि मेरे पीरो मुर्शिद मेरे दिल का ह़ाल अच्छी त़रह़ जानते हैं।

(کشف المحجوب، ص136)(نفحات الانس فارسی، ص81)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अल्लाह के नूर से देखा करता है

ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उसी सुब्ह़ से जामेअ़ मस्जिद में बयान शुरूअ़ कर दिया। लोगों में येह बात फ़ौरन फैल गई कि आज से जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान फ़रमाने लगे हैं। एक दिन किसी नौ जवान ने इज्तिमाअ़ में खड़े हो कर सुवाल किया : ऐ शैख़ ! बताइये ! हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस इर्शादे मुबारक : اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللهِ या'नी "मोमिन की फ़िरासत से डरो क्यूं कि वोह **अल्लाह** के नूर से देखा करता

है।" (ترمذی، 5/88، حدیث:3138) का क्या मत़लब है ? उस का सुवाल सुन कर चन्द लम्हों के लिये ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सर झुका लिया फिर सरे मुबारक उठा कर (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ऐ नौ जवान ! तू नसरानी (या'नी क्रिस्चेन) है और अब तेरे मुसल्मान होने का वक़्त आ पहुंचा है, ईमान ले आ। वोह जवान जो कि वाक़ेई क्रिस्चेन था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! येह करामत देख कर उसी वक़्त मुसल्मान हो गया।

(روض الریاحین، ص157 ملخصًا)

निगाहे वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

अल्लाह पाक अपने औलिया को इल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाता है

इस वाक़िए़ से मुबल्लिग़ का मक़ाम मा'लूम हुवा। سُبْحٰنَ اللّٰه ! ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बत़ौरे इन्किसार अपने आप को बयान के लिये ना अह्ल तसव्वुर फ़रमाते थे, ह़ालां कि **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़बर दस्त आ़लिम व मुफ़्ती थे, आप पर करम बालाए करम येह हुवा कि ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयान का हुक्म फ़रमाया। इस वाक़िए़ से येह भी मा'लूम हुवा कि मेरे मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब अ़त़ाए रब्बुल उ़ला ग़ैब का इ़ल्म रखते हैं, येह भी जानने को मिला कि फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ज़राते औलिया को भी इ़ल्मे ग़ैब होता है जभी तो ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने मुरीदे ख़ास का ख़्वाब जान लिया नीज़ ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने भी तो ग़ैर मुस्लिम को मोमिनाना फ़िरासत से पहचान कर ग़ैब की ख़बर से मालामाल अछूते अन्दाज़ में उसे नेकी की दा'वत इ़नायत फ़रमाई और वोह करामत भरी नेकी की दा'वत की बरकत से हाथों हाथ इस्लाम के दामने रह़मत में आ गया। (नेकी की दा'वत, स. 369)

एक नहीं दो करामतें

ह़ज़रते इमाम याफ़ई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "कुछ लोग इस वाक़िए़ को ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की एक करामत जानते हैं और मैं कहता हूं कि इस में इन की दो करामतें हैं, एक उस के कुफ़्र पर उन का बा ख़बर होना, दूसरी येह मा'लूम होना कि येह शख़्स इसी वक़्त इस्लाम ले आएगा।" (نفحات الانس، ص81)

जो हो अल्लाह का वली उस का फ़ैज़ दुन्या में आ़म होता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 441)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़िरासत की ता'रीफ़

ह़दीसे मुबारका में "**फ़िरासत**" का ज़िक्र है, इस के मा'ना भी समझ लीजिये। फ़िरासत का मा'ना है : **अल्लाह** पाक अपने औलिया के दिलों में वोह चीज़ डालता है जिस से उन्हें बा'ज़ लोगों के ह़ालात का इ़ल्म हो जाता है। (النھایہ، 3/383)

क़ीमती निकात

अबुल अ़ब्बास सुरैज رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक दिन बयान किया। (बयान के ह़सीन निकात (points) वग़ैरा सुन कर) लोग बहुत ख़ुश हुए, तो मैं ने कहा : येह अबुल क़ासिम जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सोह़बत की बरकत है। (سیر اعلام النبلاء، 11/154)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ में जहां ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की इ़ल्मी शानो अ़ज़मत ज़ाहिर होती है, वहीं ह़ज़रते अबुल अ़ब्बास सुरैज رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का अन्दाज़ मुबल्लिग़ीन के लिये बड़ा क़ाबिले अ़मल है कि जब आप के बयान की ता'रीफ़ की गई तो आप ने

बयान के उन उ़म्दा निकात को अपनी त़रफ़ मन्सूब करने के बजाए ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का फ़ैज़ान कहा । अफ़्सोस ! आज कल तो मुआ़मला इस के बिल्कुल ख़िलाफ़ है, अपनी ख़ूबी एक त़रफ़ दूसरे के काम के इन्आ़म का ह़क़दार ख़ुद को समझा जाता है कि येह काम उसे मैं ने सिखाया था वग़ैरा ।

जिस का अ़मल हो बे ग़रज़ उस की जज़ा कुछ और है

ख़्वाहिश पर अ़मल न किया

ह़ज़रते जा'फ़र बिन नसीर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि सय्यिदुत्ताइफ़ा (गुरौहे औलिया के सरदार) ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मुझे एक दिरहम दे कर फ़रमाया : "इस से मेरे लिये वज़ीरी इन्जीर ख़रीद लाओ ।" मैं ख़रीद कर लाया । जब इफ़्त़ार का वक़्त हुवा तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक इन्जीर ले कर मुंह में रखते ही फ़ौरन बाहर निकाल दिया और रोने लगे फिर इर्शाद फ़रमाया : "इसे उठा लो ।" मैं ने इस का सबब पूछा तो फ़रमाया : "मेरे दिल में ग़ैबी आवाज़ आई कि तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम ने एक ख़्वाहिश को मेरी ख़ात़िर छोड़ दिया मगर फिर उस की त़रफ़ लौट आए ।"

(الرسالۃ القشیریۃ، ص191)

अल्लाह अल्लाह के नबी से फ़रियाद है नफ़्स की बदी से
है ज़ालिम ! मैं निबाहूं तुझ से अल्लाह बचाए उस घड़ी से

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 145, 147)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : फ़रियाद : इल्तिजा । **बदी :** बुराई । **निबाहूं :** मानूं, बना कर रखूं । **घड़ी :** वक़्त ।

शर्ह़े कलामे रज़ा : अल्लाह पाक और उस के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नफ़्स की शरारतों, बुराइयों के बारे में फ़रियाद है । ऐ

अल्लाह पाक की ना फ़रमानी की त़रफ़ उक्साने वाले ज़ालिम नफ़्स ! मैं तेरी बात मानूं **अल्लाह** पाक उस वक़्त से मुझे बचाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

इन जैसा नहीं देखा

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : मैं ने बग़दाद शरीफ़ में एक शैख़ को देखा जिन्हें "**जुनैद**" कहा जाता है, मैं ने उन जैसा शख़्स नहीं देखा क्यूं कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बेहतरीन गुफ़्तगू में ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ के चुनाव की वज्ह से फ़साह़तो बलाग़त जानने वाले, मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी जानने के लिये फ़ल्सफ़ी और इल्मे कलाम के माहिरीन गहरी बातों को ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर होते। (سیر اعلام النبلاء، 11/154)

बे अदब नहीं हो सकता

ख़लीफ़ए बग़दाद ने किसी बात पर एक शख़्स से कहा : ऐ बे अदब ! उस ने जवाब दिया : मैं बे अदब हूं ! ह़ालां कि मैं आधा दिन ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में रहा हूं और जो शख़्स आधा दिन भी उन की सोह़बते बा बरकत में रहेगा वोह बे अदबी नहीं कर सकता, फिर उस का क्या ह़ाल है जो कि ज़ियादा तर उन की सोह़बत में रहा हो। (نفحات الانس، ص80)

इल्मे दीन का ह़ुसूल

आ़रिफ़ बिल्लाह (या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाले) ह़ज़रते इमाम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि सय्यिदुत्ताइफ़ा ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से किसी ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ने येह इल्म कहां से ह़ासिल किया ? आप ने अपने घर में एक सीढ़ी की त़रफ़ इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की

बारगाह में इस सीढ़ी के नीचे 30 साल तक बैठ कर येह इल्म हासिल किया। (الرسالۃ القشیریۃ، ص51)

मुझे जुनैद पर फ़ख़्र है

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ज़ियारत की, देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी ह़ाज़िर हैं, इतने में एक शख़्स आया और उस ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में एक फ़तवा पेश किया, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इशारे से फ़रमाया कि जुनैद को दे दो ताकि वोह जवाब दें। उस ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप की मौजूदगी में इन्हें कैसे दूं ! **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को अपनी उम्मतों पर फ़ख़्र था और मुझे "**जुनैद**" पर है। (شریف التواریخ، 1/29)

नफ़्स की बीमारी का इलाज

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक रात मुझे नींद न आई तो मैं उठ बैठा ताकि अपना विर्दो वज़ीफ़ा पढ़ूं लेकिन रोज़ाना वज़ीफ़ा पढ़ने के दौरान जो लज़्ज़त व सुकून महसूस होता था वोह न हुवा। मैं ने दोबारा सो जाने का इरादा किया, लेकिन नींद न आई, मैं ने फिर उठ कर बैठे रहने का इरादा किया लेकिन बैठने में भी दिल न लगा। फिर देखा कि मेरा घर लरज़ रहा है गोया अभी गिर जाएगा तो मैं घर से बाहर आ गया, बाहर आया तो क्या देखता हूं कि सख़्त सर्दी में चादर में लिपटा एक शख़्स रास्ते में लैटा हुवा है। उस ने सर उठाया और कहने लगा : ऐ अबुल क़ासिम ! मेरे पास तशरीफ़ लाइये ! मैं ने कहा : बिग़ैर किसी वा'दे और वाक़िफ़िय्यत

के! उस शख़्स ने कहा : हां, मैं ने दिलों को ह़रकत देने वाले (**अल्लाह** पाक) की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि वोह आप के दिल को मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह करे ताकि आप मेरे पास आ जाएं। फिर उस ने सुवाल किया : ऐ शैख़ ! येह इर्शाद फ़रमाएं नफ़्स की बीमारी कब उस की दवा बनती है ? मैं ने कहा : जब तू नफ़्स की ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त कर दे। फिर उस ने अपने नफ़्स को मुख़ात़ब करते हुए कहा : ऐ मेरे नफ़्स ! सुन ! मैं ने तुझे येही जवाब सात मरतबा दिया लेकिन तू ने कहा : मैं येह जवाब तब मानूंगा जब ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ख़ुद न सुन लूं। येह कह कर वोह वहां से चल दिया, मैं उस को पहचान न सका। (جامع کرامات اولیاء، 2/12)

नफ़्सानी ख़्वाहिशात हलाकत का सबब

याद रखिये ! जाइज़ व ना जाइज़ की परवा किये बिग़ैर नफ़्स की हर ख़्वाहिश पूरी करने में लग जाना इत्तिबाए़ शहवात (ख़्वाहिशात की पैरवी करना) कहलाता है। (बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 101)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी में नुक़्सान ही नुक़्सान है, ह़दीसे पाक में है : तीन चीज़ें हलाकत में डाल देती हैं : ﴾1﴿ ऐसा बुख़्ल जिस की इत़ाअ़त की जाए ﴾2﴿ नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करना ﴾3﴿ इन्सान का अपने आप को अच्छा जानना।

(معجم اوسط، 4/212، حدیث:5754)

रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैत़ां से तेरे ह़बीब का देता हूं वासित़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ख़ुतूत़ क़ब्र में

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी और शैख़ अबू बक्र किसाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا के दरमियान ख़त्तो किताबत के ज़रीए हज़ार दीनी मसाइल का तबादला हुवा था, आप ने सब के जवाब लिखे। ह़ज़रते अबू बक्र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने इन्तिक़ाल शरीफ़ के वक़्त वसिय्यत फ़रमाई कि इन सब दीनी मसाइल के ख़ुतूत़ को मेरे साथ क़ब्र में रख देना, मैं इन को ऐसा दोस्त रखता हूं कि चाहता हूं कि येह मस्अले मख़्लूक़ के हाथ से छूए भी न जाएं।

(شریف التواریخ، 1/530)

वाक़िआ़त की अहम्मिय्यत

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : मुरीदों को बुज़ुर्गों के वाक़िआ़त वग़ैरा सुनने से कुछ फ़ाएदा होता है या नहीं ? आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ज़रूर होता है اَلْحِكَايَاتُ جُنْدٌ مِّنْ جُنُوْدِ اللهِ يُقَوِّىْ بِهَا قُلُوْبَ الْمُرِيْدِيْن या'नी बुज़ुर्गों के वाक़िआ़त **अल्लाह** पाक के लश्करों में से लश्कर हैं जिन से **अल्लाह** पाक मुरीदों के दिलों को मज़बूत़ फ़रमाता है। फिर जब आप से इस बात की दलील पूछी गई तो आप ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ

(پ12، ھود:120)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और रसूलों की ख़बरों में से हम सब तुम्हें सुनाते हैं जिस से तुम्हारे दिल को क़ुव्वत दें।

(الرسالۃ القشیریۃ، ص238)

"या जुनैद" के छे हुरूफ़ की निस्बत से 6 वाक़िआते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

﴾1﴿ मुर्शिद पर मुरीद का ह़ाल पोशीदा नहीं होता

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के एक मुरीद जो कि बसरा शरीफ़ में तन्हाई में रहते थे, उन के दिल में एक रोज़ किसी गुनाह का ख़याल आया, इस बुरे ख़याल की नुहूसत से उन का चेहरा सियाह पड़ गया, वोह बड़े घबराए, तीन दिन के बा'द सियाही ख़त्म हो गई, उसी दिन उन के पीरो मुर्शिद ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ख़त़ मिला, उस में लिखा था : अपने दिल को क़ाबू में रखो, चेहरे की सियाही (कालक) धोने के लिये तीन दिन तक मुझे धोबी का काम करना पड़ा है। (تذکرۃ الاولیاء، 2/18)

﴾2﴿ पीर का इम्तिह़ान लेने वाले का अन्जाम

ह़ज़रते दाता गन्ज बख़्श सय्यिद अ़ली हिज्वेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के एक मुरीद ने येह समझ लिया कि उसे भी **अल्लाह** पाक की पहचान ह़ासिल हो गई है, अब उसे मुर्शिद की ज़रूरत नहीं रही। लिहाज़ा वोह ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह से मुंह मोड़ कर चला गया। फिर एक दिन येह देखने और आज़माने आया कि क्या ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उस के दिल के ख़यालात से आगाह हैं या नहीं ? उधर ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने भी अपने नूरे फ़िरासत से उस की ह़ालत जान ली, जब वोह मुरीद ह़ाज़िर हुवा और एक सुवाल किया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : कैसा जवाब चाहता है ! लफ़्ज़ों में या मा'नों में ? बोला : दोनों त़रह़। तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर लफ़्ज़ों में जवाब चाहता है तो सुन ! अगर मुझे आज़माने से पहले ख़ुद

को आज़माता तो मुझे आज़माने की ज़रूरत पेश न आती और मा'नवी जवाब येह है कि मैं ने तुझे मन्सबे विलायत से मा'ज़ूल किया। वोह कहने लगा : यक़ीन की राहत मेरे दिल से चली गई, फिर तौबा व इस्तिग़फ़ार करने लगा। ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : तू नहीं जानता कि **अल्लाह** पाक के वली उस के राज़ों से ख़बरदार होते हैं ! फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस पर दम किया तो वोह अपनी ह़ालत में वापस आ गया। (کشف المحجوب، ص137)

﴾3﴿ डॉक्टर का इलाज हो गया (करामत)

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मुबारक आंखें एक बार बीमार हुईं और दर्द शुरूअ़ हुवा, एक ग़ैर मुस्लिम त़बीब (या'नी डॉक्टर) ने कहा : आंखों को पानी से बचाना, (मगर) आप ने इ़शा की नमाज़ के लिये वुज़ू किया तो सुब्ह़ को दर्द ख़त्म हो गया और ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ जुनैद ! तू ने हमारी इ़बादत में आंख का ख़याल नहीं किया इस लिये हम ने तुम्हारा दर्द ख़त्म कर दिया। सुब्ह़ जब त़बीब ने मा'लूमात की तो आप ने फ़रमाया कि वुज़ू करने से मेरा दर्द दूर हो गया। वोह उसी वक़्त आप की इस करामत और साबित क़दमी से मुतअस्सिर हो कर सच्चे दिल से मुसल्मान हो गया। (شریف التواریخ، 1/526 بتغیر)

येह जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का तवक्कुल था और तवक्कुल के आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ होने की बिना पर उन्हों ने ऐसा किया, एक आ़म मुसल्मान के लिये येह ह़ुक्मे शर्ई है कि अगर कोई दीनी मा'लूमात रखने वाला माहिर डॉक्टर जो फ़ासिक़े मो'लिन न हो अगर किसी मरज़ में पानी इस्ति'माल

न करने या किसी और शर्ई मस्अले में आसानी का हुक्म दे तो मुफ़्ती साहिब से मश्वरा कर के उस आसानी पर अ़मल किया जा सकता है।

डॉक्टर मुतवज्जेह हों

बा'ज़ डॉक्टर छोटी सी बीमारी पर मरीज़ को रोज़ा छोड़ने, नमाज़ बैठ कर पढ़ने या न पढ़ने वग़ैरा के अह़काम जारी कर देते हैं, ऐसे डॉक्टरों से अ़र्ज़ है कि दीनी मस्अले में अपनी त़रफ़ से दख़्ल अन्दाज़ी करना बहुत बड़ी जुर्अत मन्दी है, अगर आप को किसी मरीज़ के मरज़ के बारे में ऐसी आसानी पर अ़मल न करने के नुक़्सान का सो फ़ीसद यक़ीन हो फिर भी उस मरीज़ को अपनी त़रफ़ से आसानी देने के बजाए अपनी राय का इज़्हार कर के आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत की त़रफ़ रहनुमाई करनी चाहिये वरना ख़ुदा न ख़्वास्ता आप गुनाह का मश्वरा देने वाले बन सकते हैं। दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से राबित़े के लिये इस नम्बर पर वॉट्सएप कीजिये :

8392922526

टाइम : 11:00 am To 4 : 00 pm

﴾4﴿ सब्र की तल्क़ीन

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक मरतबा किसी की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए, उस वक़्त वोह बीमारी के सबब रो रहे थे, ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उन्हें नसीह़त करते हुए फ़रमाया : किस की अ़त़ा कर्दा तक्लीफ़ पर रो रहे हो ? और किस से इस की शिकायत करना चाहते हो ? आप की येह ह़िक्मत भरी बात सुन कर वोह चुप हो गए। (تذکرۃ الاولیاء، 12/2)

﴾5﴿ शैत़ान को ला जवाब कर दिया

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मेरे दिल में शैत़ान को देखने की ख़्वाहिश पैदा हुई, चुनान्चे एक दिन मैं मस्जिद के दरवाज़े पर था, मुझे दूर से एक बूढ़ा आता दिखाई दिया, उसे देखते ही मैं ने अपने दिल में वह़शत मह़सूस की, जब वोह क़रीब आया तो मैं ने पूछा : तू कौन है ? बोला : वोही हूं जिसे देखने की आप ने ख़्वाहिश की थी। मैं समझ गया कि येह इब्लीस है, मैं ने उसे डांटते हुए कहा : ऐ ख़बीस ! तुझे ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सज्दा करने से किस चीज़ ने रोका ? इब्लीस बोला : ऐ जुनैद ! आप क्या चाहते हैं मैं ग़ैरे ख़ुदा को सज्दा कर लेता ? ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इब्लीस की येह बात सुन कर मैं ह़ैरान रह गया, उसी वक़्त मुझे इल्हाम हुवा (या'नी मेरे दिल में येह बात डाल दी गई) कि ऐ जुनैद ! इसे कह दो ! كَذَبْتَ،لَوْكُنْتَ عَبْدًا مَأْمُوْرًا مَاخَرَجْتَ عَنْ اَمْرِه या'नी ऐ ख़बीस ! तू झूटा है, अगर तू वाक़ेई अपने मालिक (या'नी **अल्लाह** करीम) का फ़रमां बरदार बन्दा होता तो हरगिज़ उस के हुक्म की ना फ़रमानी न करता। शैत़ान आप के दिल की बात पहचान गया और फ़ौरन ही वहां से दौड़ गया। (کشف المحجوب، ص137 بتغیر)

﴾6﴿ एक ग़ैर मुस्लिम का मुसल्मान होना

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मरतबा बाबुत्तल्क़ में एक इन्तिहाई ख़ूब सूरत ग़ैर मुस्लिम नौ जवान को देखा तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : इलाही ! तू ने इस नौ जवान को बे पनाह ह़ुस्न दिया है, इसे मेरे काम का बना दे या'नी इसे मा'रिफ़ते इलाही अ़त़ा फ़रमा दे। आप की दुआ़ को अभी कुछ देर ही गुज़री थी कि वोह आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में

हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया : मुझे कलिमा पढ़ा दें। आप ने उसे कलिमा पढ़ाया, मुसल्मान किया और फिर वोह नौ मुस्लिम चन्द दिनों की सोहबत के बा'द मक़ामे विलायत पर पहुंच गया। (کشف المحجوب، ص54 ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

इस वक़्त कलिमे को भूलूंगा ?

हज़रते अबू मुहम्मद जुरैरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इन्तिक़ाल शरीफ़ के वक़्त उन के पास हाज़िर हुवा तो आप तिलावत कर रहे थे, जुमुआ़ का दिन था, जब आप तिलावत ख़त्म कर चुके तो मैं ने अ़र्ज़ की : आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस वक़्त में भी तिलावत कर रहे हैं ! तो उन्हों ने फ़रमाया कि मुझ से ज़ियादा तिलावत का हक़दार दूसरा कौन होगा ! देख नहीं रहे हो कि मेरी ज़िन्दगी का नामए आ'माल लपेटा जा रहा है। (احیاء العلوم، 5/232) फिर किसी ने आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से कलिमा पढ़ने के लिये कहा तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि मैं इस कलिमे को तो ज़िन्दगी में कभी भूला ही नहीं हूं जो तुम मुझे इस वक़्त याद दिला रहे हो।

(الرسالۃ القشیریۃ، ص338 مفہوماً)

ख़त्मे क़ुरआने करीम के बा'द फिर तिलावत.....

हज़रते अबू बक्र अ़त्वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के विसाल के वक़्त उन के पास था। उन्हों ने पूरा क़ुरआने करीम ख़त्म किया फिर सूरए बक़रह से तिलावत शुरूअ़ की और सत्तर (70) आयात पढ़ने के बा'द आप का इन्तिक़ाल शरीफ़ हो गया।

(الرسالۃ القشیریۃ، ص51)

आख़िरी वक़्त में भी नमाज़

आप की वफ़ात शरीफ़ की एक कैफ़िय्यत का कुछ यूं भी बयान है : ह़ज़रते अबू बक्र अ़ता رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं अपने चन्द साथियों के साथ ह़ज़रते अबुल क़ासिम जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की वफ़ात शरीफ़ के वक़्त उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर था, उस वक़्त आप बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे थे, जब सज्दे का इरादा करते तो अपने पाउं को समेट लेते, आप इसी त़रह़ करते रहे, उस वक़्त मौजूद बस्सामी नाम के आप के एक दोस्त ने देखा कि आप के पाउं सूजे हुए हैं तो कहा : अबुल क़ासिम ! येह क्या है ? फ़रमाया : येह **अल्लाह** पाक की ने'मतें हैं, **अल्लाहु अक्बर** । जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए तो ह़ज़रते अबू मुह़म्मद जुरैरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप को लैट जाना चाहिये । फ़रमाया : अबू मुह़म्मद ! येह इन्आ़म का वक़्त है, **अल्लाहु अक्बर** । फिर उसी ह़ालत पर रहे यहां तक कि आप का विसाल हो गया । (حلیۃ الاولیاء، 10/299، رقم:15295)

सआ़दत मन्द मुरीद

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का इन्तिक़ाल शरीफ़ 298 हिजरी में जुमुए़ के दिन हुवा और अगले दिन तदफ़ीन हुई, तक़रीबन साठ हज़ार लोग आप की नमाज़े जनाज़ा में शरीक हुए। आप के मज़ार शरीफ़ पर लोग रोज़ाना एक माह या इस से भी ज़ियादा दिन तक ह़ाज़िरी देते रहे । आप अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की ह़याते मुबारका (या'नी ज़िन्दगी मुबारक) में सोह़बत पाने के साथ साथ बा'दे विसाल भी साथ हैं । आप का मज़ार शरीफ़ अपने पीरो मुर्शिद के मज़ार शरीफ़ के बिल्कुल साथ बग़दादे मुअ़ल्ला में रौनक़ अफ़्रोज़ है । (تاریخ بغداد، 7/255، 256)

नमाज़े तहज्जुद की बरकत से बख़्शिश

ह़ज़रते इमाम जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : ऐ अबुल क़ासिम ! बा'दे वफ़ात आप के साथ क्या मुआ़मला हुवा ? फ़रमाया : हमें सिर्फ़ उन छोटी छोटी रक्अ़तों ने फ़ाएदा दिया जो हम सह़र के वक़्त अदा किया करते थे।

(حلیۃ الاولیاء، 10/276، ماخوذاً)

सुब्ह़ की तस्बीह़ात काम आ गईं

एक और रिवायत में है, आप ने किसी के ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : हमारे इशारात व इ़बारात ने हमें कोई फ़ाएदा नहीं पहुंचाया बल्कि हमें उन तस्बीह़ात ने नफ़्अ़ दिया जो हम सुब्ह़ के वक़्त पढ़ा करते थे।

(الرسالۃ القشیریہ، ص419)

"या जुनैद" के छे ह़ुरूफ़ की निस्बत से 6 इर्शादाते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

﴿1﴾ जो चाहे कि उस का दीन बच जाए और उस का क़ल्ब व जिस्म राह़त पाए तो लोगों से न मिले क्यूं कि येह वह़शत का दौर है। अ़क़्लमन्द वोह है जो इस दौर में तन्हाई इख़्तियार करे। तन्हाई की मशक़्क़त बरदाश्त करना लोगों की चापलूसी करने से ज़ियादा आसान है। (الطبقات الکبریٰ للشعرانی، 1/121)

﴿2﴾ **अल्लाह** पाक जब किसी मुरीद से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे सूफ़ियाए किराम के क़दमों में डाल देता है। (الطبقات الکبریٰ للشعرانی، 1/121)

﴿3﴾ मैं ने किसी को कभी नहीं देखा कि दुन्या की ता'ज़ीम करे फिर उस में उस की आंखें ठन्डी होती हों, आंखें सिर्फ़ उस की ठन्डी होती हैं जो इसे ह़क़ीर जाने और इस से मुंह फेर ले। (الطبقات الکبریٰ للشعرانی، 1/122)

﴾4﴿ जो अपने नफ़्स पर अच्छी निय्यत का दरवाज़ा खोलता है तो **अल्लाह** पाक उस पर तौफ़ीक़ के सत्तर दरवाज़े खोल देता है और जो अपने नफ़्स पर बुरी निय्यत का दरवाज़ा खोलता है **अल्लाह** पाक उस पर रुस्वाई के सत्तर दरवाज़े वहां से खोल देता है कि उसे शुऊ़र तक नहीं होता।

(الطبقات الکبریٰ للشعرانی، 1/122)

﴾5﴿ बीमारियों और दुख दर्द में चार ख़ुसूसिय्यात हैं : (1) पाकीज़गी (2) मिटाना (3) याद दिलाना और (4) क़ैद करना। बीमारियां, परेशानियां कबीरा (या'नी बड़े बड़े) गुनाहों से पाकीज़गी और छोटे गुनाहों को मिटाना और **अल्लाह** पाक की याद दिलाना और गुनाहों से रोकना। (شعب الایمان، 7/227، حدیث:10106)

(या'नी जब कोई बन्दा बीमार होता है तो उसे येह चार बरकतें ह़ासिल होती हैं, वोह बड़े बड़े गुनाहों से पाक होता है, उस के छोटे गुनाह मिट जाते हैं, बीमार शख़्स **अल्लाह** पाक को याद करता है और बीमार शख़्स गुनाहों से रुक जाता है।)

﴾6﴿ दुन्या में दो आफ़तें हैं : (1) इ़ल्म की आफ़त और (2) माल की आफ़त। इ़ल्म की आफ़त से नजात के लिये इ़ल्म पर अ़मल करे और माल की आफ़त से बचने के लिये माल से बे रग़बत (बे परवा) हो।

(فیض القدیر، 1/519، تحت الحدیث:716)

(ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ीद इर्शादात पढ़ने के लिये मक्तबतुल मदीना का रिसाला ''इर्शादाते जुनैदे बग़दादी'' पढ़िये या दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislamiindia.org से फ़्री डाउनलोड कर के ख़ुद भी पढ़िये और अपने जानने वोलों को फ़ॉरवर्ड कर के सवाब कमाइये।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
मालदारी दिल से है न कि माल से	2	क़ीमती निकात	16
अस्ल मालदारी किस में है ?	2	ख़्वाहिश पर अ़मल न किया	17
अल्लाह वालों की नज़र में दुन्या की ह़ैसिय्यत	3	इन जैसा नहीं देखा	18
तआ़रुफ़	4	बे अदब नहीं हो सकता	18
शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में ज़िक्रे ख़ैर	4	इ़ल्मे दीन का ह़ुसूल	18
		मुझे जुनैद पर फ़ख़्र है	19
दुआ़इया शे'र का मफ़्हूम	5	नफ़्स की बीमारी का इ़लाज	19
अ़रबी शजरा	5	नफ़्सानी ख़्वाहिशात हलाकत का सबब	20
शानो अ़ज़मत	6	ह़ज़रते जुनैद बग़दादी के ख़ुतूत क़ब्र में	21
बाज़ार में इ़बादत	7	वाक़िआ़त की अहम्मिय्यत	21
दिल की बात जान ली (करामत)	8	मुर्शिद पर मुरीद का ह़ाल पोशीदा नहीं होता	22
सारा साल रोज़े	9	पीर का इम्तिह़ान लेने वाले का अन्जाम	22
नेक बन्दे नेक आ'माल नहीं छोड़ते	9	डॉक्टर का इ़लाज हो गया (करामत)	23
पीरो मुर्शिद की नसीह़त	10	डॉक्टर मुतवज्जेह हों	24
ह़ुज़ूर से मिट्टी के बरतनों का इस्ति'माल साबित है	11	सब्र की तल्क़ीन	24
		शैत़ान को ला जवाब कर दिया	25
सात साल की उ़म्र में इ़ल्मी फ़ज़्लो कमाल	12	एक ग़ैर मुस्लिम का मुसल्मान होना	25
20 साल की उ़म्र में फ़तवा नवीसी	13	इस वक़्त कलिमे को भूलूंगा ?	26
बयान का आग़ाज़ और पीरो मुर्शिद का इख़्तियार	13	ख़त्मे क़ुरआने करीम के बा'द फिर तिलावत.....	26
अल्लाह के नूर से देखा करता है	14	आख़िरी वक़्त में भी नमाज़	27
अल्लाह पाक अपने औलिया को इ़ल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाता है	15	सआ़दत मन्द मुरीद	27
		नमाज़े तहज्जुद की बरकत से बख़्शिश	28
एक नहीं दो करामतें	16	सुब्ह़ की तस्बीह़ात काम आ गईं	28
फ़िरासत की ता'रीफ़	16	इर्शादाते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	28

फ़रामीने जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

हाथ में तस्बीह़ रखने की वज्ह

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के हाथ में तस्बीह़ देख कर किसी ने अ़र्ज़ की, कि इतने बड़े बुज़ुर्ग बन जाने के बा'द भी आप अपने हाथ में तस्बीह़ रखते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : जिस रास्ते (या'नी तस्बीह़) के ज़रीए़ मैं **अल्लाह** पाक तक पहुंचा हूं मैं उसे नहीं छोड़ सकता। (المستطرف، 1/252)

इल्म के नूर और बरकतों का रुख़्सत होना

इ़ल्मे दीन के तुम पर जो हुक़ूक़ हैं अगर तुम उन्हें पूरा किये बिग़ैर इ़ल्म के ज़रीए़ इ़ज़्ज़त ह़ासिल करना या ख़ुद को इ़ल्म की त़रफ़ मन्सूब करना या इ़ल्म वाला (या'नी आ़लिम वग़ैरा) कहलवाना चाहोगे तो **"इ़ल्म का नूर"** तुम से ग़ाइब हो जाएगा और तुम पर सिर्फ़ इ़ल्म का निशान बाक़ी रहेगा, येह इ़ल्म तुम्हारे ह़क़ में नहीं बल्कि तुम्हारे ख़िलाफ़ होगा और ऐसा इस लिये है कि बेशक इ़ल्म अपने इस्ति'माल (या'नी अ़मल) की त़रफ़ बुलाता है और अगर इ़ल्म पर अ़मल न किया जाए तो उस की (कई) बरकतें रुख़्सत हो जाती हैं। (حلیۃ الاولیاء، 10/287)

ख़िलाफ़े शर्अ़ काम करने वालों को नसीह़त

बे इ़ल्म और ख़िलाफ़े शर्अ़ काम करने वाले फ़क़ीर लोग जो यहां तक कह देते हैं कि शरीअ़त एक रास्ता है और रास्ते की ज़रूरत उन को होती है जो मक़्सद तक न पहुंचे हों, हम तो पहुंच गए। ऐसों के बारे में ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : बेशक वोह सच कहते हैं, वोह पहुंच गए मगर कहां ? जहन्नम में। (الیواقیت والجواہر، ص206)

www.dawateislami.net

अगले हफ़्ते का रिसाला